© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 10 | October – December 2017

चासणी कविता संग्रह में शिल्प विधान

डॉ. आशुतोष कौशिक, 742/33, शान्त नगर, काठ–मण्ड़ी, रोहतक।

ISSN : 2348-5612 © URR

ABSTRACT : शिल्प वह तत्व हैं जिसके माध्यम से रचना का प्रस्तुतीकरण होता हैं, अर्थात कवि अपनी रचना के प्रस्तुतीकरण में जिन उपकरणों अथवा उपादानों का प्रयोग करते हैं वे सभी विधान शिल्प के तत्व कहलाते हैं। उदाहरण के लिए भाषा, अलंकार, छन्द, कहावतें, संगीतात्मकता आदि। [1]

शर्मा जी ने 'चासणी' कविता संग्रह में 19 कविताओं को प्रस्तुत किया है। शर्मा जी ने इन कविताओं में हमें हरियाणवी संस्कृति से रूबरू करवाया है। "इन कविताओं में कवि ने न तो ब्रजी को अपनाया है न ही अवधी को तथा न ही खड़ी बोली को, बल्कि हमारे घर की भाषा हरियाणवी को अपनाया है। इसलिए इसे 'गोचणी' कहा जा सकता है। यह हरियाणा की चासणी है। इसे चखकर हरियाणवी का स्वाद लिया जा सकता है। 'चासणी' नामक कविता संग्रह में बिम्बों व प्रतीकों को ढूँढ़ना व्यर्थ है। अतः शर्मा जी ने इन कविताओं को हरियाणवी फूलझड़ियाँ भी कहा है।"[1]

भाषा– भाषा भावों का वाहन होती हैं। काव्य कृतियों में अभिव्यक्ति का प्रमुख तत्व भाषा को ही माना गया हैं। भाषा के सम्बन्ध में कॉलरिज का कथन हैं कि –'भाषा मानव मन का शस्त्रागार हैं जिसमें उसके अतीत के विजय स्मारक और भावी विजयों के शस्त्र एक साथ रहते हैं।[2]

शर्मा जी ने अपने काव्य संग्रह में हरियाणवी को ही अपनाया हैं एक उदाहरण देखिए–

सुणल्यों नै यारो या बात तो पुराणी सै
मन्नै भी लोगों या सुणी तो कहाणी सै [3]

कोमलकान्त पदावली– डॉ0 विश्वबन्धु शर्मा के काव्य में कृत्रिम साज सज्जा व जटिलता का कहीं भी प्रयोग नहीं हुआ है। कोमल भावों की अभिव्यक्ति में कवि द्वारा माधुर्यगुण सम्पन्न कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया है। इनके काव्य में गेयता पाई जाती है, जो भाव सौन्दर्य में वृद्वि करती है–

हाय हाय बारिश क्यूँ ना आई।
तेरे बिन छाई देस पै करड़ाई।
साल बीत लिया सारा इब लग टोपा भी ना आया।
बिन बारिस लोगॉ नै बीज बेचकें खाया।
खेतां मैं पानी कित तैं लागैं
यों पीवन न भी ना थ्याया।[4]

इन कविताओं में कवि ने हरियाणा की लोक–परम्परा, संस्कृति, सामाजिक परम्परा, छुआछूत, बढ़ती महँगाई, दहेज जैसी कुप्रथा, बुराई की जड़ शराब, आदि अनेक समस्याओं के समाधानों को उजागर किया है।

शर्मा जी की हरियाणवी कविताओं का वर्णन इस प्रकार है – 'शहीदों को नमन' कविता में देश की राजनीतिक व्यक्तित्वों के ध्वस्त होते राजनीतिक मूल्यों का चिंतन है। साथ ही देश के लिए निःस्वार्थ भाव से अपने जीवन को होमने वाले व्यक्तियों को नमन किया है।

'हास्य कवि' शीर्षक कविता में हास्य कवि के व्यक्तित्व को उजागर करन का प्रयास किया है। वह श्रोताओं को हँसाता है, लेकिन स्वयं अन्दर ही अन्दर उस विसंगतियों पर रोता है, दूसरे के दर्द को अनुभव करता है, उसे हजम करता है, अपनी टीस, खीज और कुछ भी न कर पाने की लाचारी को लेकर हँसी की फूलझड़ियाँ छोड़ता है, लेकिन गुणीभूत व्यंग्य और व्यंजना के माध्यम से वह अकथ्य को कह देता है जो आम आदमी को उन विसंगतियों पर सोचने के लिए मजबूर कर देता है।

'माँ शारदा' कविता में माँ शारदा के गुणों का गायन करते हुए उससे कार्य–सिद्धि की प्रार्थना की है।

'देहाती' शीर्षक कविता में वर्तमान समय की व्यवस्था को उजागर किया है। बढ़ती महँगाई ने गरीबों की कमर तोड़ दी है। और नेता भी व्यापारियों के हाथों की कठपुतली बने हैं।

स्पष्टता–

शर्मा जी के काव्य की भाषा का एक गुण स्पष्टता भी हैं। अपनी बात को स्पष्ट शब्दों में कहना वो अपना धर्म मानते हैं। 'देहाती' शीर्षक कविता से एक उदाहरण देखिए–

अबकी बारी अटल बिहारीये
यो गाणा हम गाते थे।
मन्त्री सन्त्री सुणों सभी हम
घर में गंठा रोटी खाते थे।
हर सब्जी मैं प्याज गेरते
ये सस्ते मैं आ ज्याते थे।
सस्ती चीज लेण नै भाई
हम शहरां की मण्ड़ी के म्हां जाते थे। [5]

'एकली भतेरी' शीर्षक कविता में गाँव की एक बाला का चित्रण किया है, जिसने गोरों को धूल चटा दी थी। आजादी से पूर्व यत्रा–तत्रा अंग्रेजों की क्रूरताओं का विरोध होता रहा है, इस विरोध में हरियाणा भी पीछे नहीं था। इसी ऐतिहासिक तथ्य को इस कविता में उकेरा गया है। हाँसी के पास का एक छोटा सा गाँव रूहणात इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

'जहर का लाडू' कविता में वर्तमान समय में पति–पत्नी का पवित्रा रिश्ता कलह का रिश्ता बना हुआ है। दोनों का अहं दोनों को सुख से नहीं रहने देता है। छोटी–छोटी बातों पर दोनों झगड़ते रहते हैं। दोनों में से एक भी नहीं समझ पा रहा है कि अपने प्रेम के लिए अपने को कुर्बान करना ही सच्चा प्रेम है।

अलंकार–

काव्य में रमणीयता व चमत्कार उत्पन्न करने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। पंत जी लिखते हैं कि 'अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, व भावों की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के लिए राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान हैं।[6]

अतः अलंकार वाणी का साधन हैं साध्य नहीं। शर्मा जी के काव्य में भी अनुप्रास, उपमा, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग देखा जा सकता है।

अनुप्रास– शुभां शुभागाम् शोभन प्रियाम दिव्य रूपा धारिणी
बुद्वि प्रदा, कर कमल धरा, विद्या प्रचारिणी।[7]

उपमा– भरपाई ने छेड़ बैठया
किस्मत उसकी माड़ी थी,
हाथ लगाते जाटनी
शेरणी सी दहाड़ी थी।[8]

मानवीकरण– जन्म लिया था अच्छे घर मैं।
बड़ी हुई थी तकड़े घर मैं।
आज देख रही थी दर–दर नै।[9]

'बणगी नई कहानी' शीर्षक कविता में कवि ने 'दहेज' जैसी कुप्रथा का वर्णन किया है। इस बुराई के कारण अनेकानेक बालाओं का जीवनदीप बुझा दिया जाता है। इसके कारण अनेक बालाएँ अनमेल विवाह का शिकार हो जाती हैं। इसमें हरियाणा की एक ऐसी ही बाला का चित्राण है। जिसे दहेज के अभाव में बूढ़े के साथ विवाह करना पड़ता है। 'बैक गेर लाया' नामक कविता में कवि ने दो पीढ़ियों का अन्तराल तथा अनेकानेक ह्रास होते मूल्यों को संकेतित किया है। दो पीढ़ियों की टकराहट विसंगति का कारण है। नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से पूर्णतः भिन्न सोच की है। अध्यापकीय वृत्ति भी इस विसंगति से नहीं बच पा रही है। आज का विद्यार्थी क्या सीखने आता है ? और क्या सीख रहा है ? अध्यापक क्या सिखाना चाहता है ? और क्या सिखा रहा है ? टूटते मूल्यों की दास्तान आदि को इसमें दर्शाया गया है।

छन्द– चासणी में शर्मा जी ने अतुकान्त छन्द का प्रयोग अधिक किया है। वे कविता को भावना प्रधान मानते हैं। छन्दों के दायरे में पड़कर कविता की मूल आत्मा खण्ड़ित हो सकती है। यह उनका कथन है। अतुकान्त छन्द का एक उदाहरण देखिए–

या होली नेड़ै आ रही सै,
सब के दिल नै ठा रही सै।
मनका मण्का फसग्या रै,
यो धी का दीवा चसग्या रै।[10]

'कड़ पै बोरी ठावै था' इस कविता में कवि ने दर्शाया है कि जुआ खेलना एक बहुत बड़ा व्यसन है। राजा नल, युधिष्ठर आदि का पतन इसके पौराणिक उदाहरण हैं। आजकल अनेक नवयुवक इसके आदि होकर अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। हरियाणा के ही एक युवक को माध्यम बनाकर उसके महानाश का चित्राण कविता की मूल चेतना है। अच्छा खासा हँसता–खेलता जमींदार परिवार इसकी चपेट में आकर जमींदार से मजदूर बन जाता है।

कहावतें– शर्मा जी ने सहजता से लोक कहावतों को अपने काव्य में समाहित किया हैं, कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

1 लोग कहैं सैं धोए कान होए असनान
2 क्यू कर करजा पाड़ॉगे जिब, घर में मूसे कल्ला खा रहे सैं।
3 हथ कढ़ दारू कुरड़ी मार्का।
4 मरद हो हीणा अर लुगाई भारया, उसनै पड़ज्या बिपता ठाणी।

'प्याली' शीर्षक कविता में कवि ने दर्शाया है कि शराब समाज की सबसे बुरी–बीमारी है। इसने लाखों घरों को बर्बाद कर दिया है। सभी बुराईयों की जड़ शराब है। यह पीने वाले के जीवन को समाप्त कर देती है। जमींदार से कंगाल बने एक बूढ़े व्यक्ति की आप बीती का कोरा चिट्ठा 'प्याली'

कविता है। इन कविताओं के माध्यम से हरियाणवी प्रदेश की झलक दिखाई है कि किस प्रकार हरियाणा वासी अपने को अनेक बुराईयों से ग्रस्त करते जा रहे हैं, जो हमारी लोक–संस्कृति के लिए घातक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'चासणी' कविता संग्रह शर्मा जी की सराहनीय कृति है जिसको पढ़कर हम हरियाणवी संस्कृति से रूबरू हो सकते हैं। चासणी काव्य संग्रह सफल सहज, सुबोध व हरियाणवी लोकसंस्कृति का संग्रह माना जाता हैं। इनके काव्य में संगीतात्मक प्रवाह कविताओं को और भी प्रभावशाली बनाता हैं। कविताओं की भाषा हरियाणवी, सहज, सरल, व सुबोध है। भाषा में लोक कहावतों का सफलतापूर्वक प्रयोग हुआ है। अलंकार, छन्द, प्रचलित ठेठ ग्रामीण कहावतें आदि के प्रयोग से उनकी अभिव्यक्ति में श्री वृद्वि हुई हैं।

REFERENCES :

1 रामस्वरूप चतुर्वेदी : भाषा और संवेदना पृ0 11
2 मैथिली प्रसाद भारद्वाजः पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्वान्त पृ0 108
3 डा0 विश्व बन्धु शर्मा : चासणी कविता संग्रह पृ 11
4 डा0 विश्व बन्धु शर्मा : चासणी कविता संग्रह पृ 28
5 ड़ॉ विश्वबन्धु शर्मा : चासणी कविता संग्रह पृ0 9
6 सुमित्रा नन्दन पंत :पल्लव विज्ञापन पृ0 22
7 डा0 विश्वबन्धु शर्मा :चासणी कविता संग्रह पृ08
8 डा0 विश्वबन्धु शर्मा :चासणी कविता संग्रह पृ011
9 डा0 विश्वबन्धु शर्मा :चासणी कविता संग्रह पृ015
10 डा0 विश्वबन्धु शर्मा :चासणी कविता संग्रह पृ017